ISSN: 2583-5149 | An online refereed and peer reviewed journal | Frequency: Biannual

अभिनवधारा
ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
www.ijiis-org.com

Vol-3, Issue-2 | July 2024

संस्कृत साहित्य के नूतन शिल्पकार : हर्षदेव माधव

मृगांक मलासी
सहायक आचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग उत्तराखण्ड

कोई भी भाषा तभी तक जीवित रहती है जब तक वह व्यावहारिक रूप से भी दिखायी दे। इस परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भाषा की बात की जाए तो आज व्यावहारिक रूप से इसके स्वरूप में ह्रास दिखाई देता है। आज के इस दौर में संस्कृत के वास्तविक अध्येताओं की संख्या गणनीय मात्र है। ऐसे समय में भी कतिपय उत्साही विद्वान इस भाषा को जीते हुए रचनाएँ कर रहे हैं। प्राचीन संस्कृत साहित्यकारों के समान ही आधुनिक संस्कृत भाषा में भी अनेक साहित्यकारों ने विविध विधाओं से परिपूर्ण साहित्य का प्रणयन कर रहे हैं। इन आचार्यों में राधावल्लभ त्रिपाठी, राजेन्द्रमिश्र सदृश विद्वानों से सभी परिचित हैं। इन्हीं के मध्य एक सशक्त स्वर जो वर्तमान में उठकर आया है वह नाम है हर्षदेव माधव का। गुजरात प्रान्त के निवासी हर्षदेव माधव की रचनाओं में नवीन तथ्य और कथ्य शैली देखी जा सकती है। जीवन के प्रत्येक स्थिति पर गहरा चिन्तन माधव की रचनाओं में देखा जा सकता। फिर चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो अथवा राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक या इनसे इतर अन्य क्षेत्र। किसी भी स्पन्दमान भाषा की भाँति संस्कृत में न केवल नयी-नयी विधाओं की अवतारणा हो रही है अपितु अभिनव विचार तथा कतिपय प्राचीन विचार भी अपने समसामयिक आयामों में आचार्य के साहित्यिक क्रोड में स्थान पा रहे हैं। वही तान्का और हाईकू जैसी वैदेशिक विधाओं में काव्य प्रणयन कर आचार्य मानवीय संवेदना को अल्प शब्दों में ही प्रस्फुटित कर देते हैं। अपनी साहित्य साधना से अर्वाचीन संस्कृत जगत् को स्तब्ध कर देने वाले इस साधक ने विश्वमंच पर अपनी एक पहचान दी है। इनका अलौकिक प्रेम कब सरणि तय करता हुआ परमात्म चिन्तन में बदल जाता है इसका अनुमान पाठक नहीं कर पाता। आधुनिक वाङ्मय किस प्रकार से वर्तमान परिवेश के चित्रण से युक्त हो सकता है किस प्रकार से वह अर्वाचीन समस्याओं को सम्मुख रख सकता है इसका उदाहरण माधव जी के काव्यों में मिलता है। यथा-

हरिणी हताव्याधेन निष्ठुरेण
सायं खादिता सा पुनः श्वसिति।
व्याधवध्वा वक्षसि॥

आचार्य के काव्य में सामान्य जीवन के प्रत्येक क्षण का वर्णन है। उसमें मानव की त्रासदी, उसके नैतिक मूल्य, स्त्री विमर्श आदि सभी पक्षों पर चिन्तन किया गया है। इसमें सभी समस्याओं अथवा जीवन के आदर्शों, संस्कारों पर बात की गयी है।

किसी भी चिन्तन अथवा तथ्य के निश्चित रूप से दो पक्ष अवश्य होते हैं सकारात्मक पक्ष और नकारात्मक पक्ष। मूल्य समाज स्वीकृत इच्छाएँ तथा लक्ष्य है जिनका अन्तरीकरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है और जो कि प्रातीतिक अभिमान्यताएँ मान तथा अभिलाषाएँ बन जाती है।[1] संस्कृत वाङ्मय में स्थूल से सूक्ष्म तक व्यष्टि से समष्टि तक कल्पना से यथार्थ तक जो कुछ भी वर्णन हुआ है उसमें जीवन-मूल्यों के प्रति भी गम्भीर उपदेश है। हर्षदेव माधव आधुनिक साहित्यकार हैं जिनके अभिनव प्रयोग संस्कृत साहित्य के क्रोड में आकारित हो रहे हैं। माधव ने तान्का, हाइकु आदि वैदेशिक विधाओं को आधार बनाकर उन्हें संस्कृत भाषा में स्थान दिया है। माधव के काव्य में वर्णित जीवन-मूल्यों पर बात करें तो माधव ने समाज की प्रत्येक विसंगति पर प्रहार किया है। वस्तुतः उनके काव्य में यथार्थ पर अधिक बल है जो भावनाओं पर व्याघात कर समाज को झकझोरने का कार्य करता है।

कवि समाज की उन विडम्बनाओं को उकेरना का साहस करता है जिस पर प्रायः अधिकांश कविजन कहना नहीं चाहते अथवा सांस्कृतिक उच्छृंखलता कहकर विराम ले लेते हैं। माधव का साहस ही है कि वह रेडलाइट एरिया जैसे उपेक्षित विषय को भी अपने काव्य में स्थान देकर प्रातिभ चातुर्य से विशिष्टता प्रदान करते हैं। पुनश्च उनके अभिनव बिम्ब और नूतनतम विधा तो वस्तुतः सुवर्ण में सुगन्ध उत्पन्न कर देती है।

यथा-

अत्र/ सन्ति पुष्पामामान्त्रणानि/किन्तु/सुरभेमर्दकत्वं नास्ति/ अत्र सन्ति पञ्जरबद्धानां, सरिकाणां कलानि/ किन्तु/ वसन्तोन्मादो नास्ति/ शब्दाः सन्ति- अर्थ संवेदन रहिताः/ जलमस्ति चित्रितम्/ उद्यानमस्ति- प्रफुल्लत्व रहितम्। तृष्णा वने विहरन्ति/ काञ्चनपार्श्वमृगचर्मत्वयो हरिण्यः / अधुना रामपञ्चवटीं विहाय गतः/ अत्र सन्ति निशाचराणां सञ्चारः।[2]

माधव के अन्दर का कवि गौरव-गुणगान से संतुष्ट नहीं हो पाता अतः वह समाज के उन मूल्यों को जिन्हें छोड़कर समाज अन्य दिशा में बढ़ रहा है, उनकी याद दिलाता है। आचार्य 'भाति ते भारतम्'

---

1 Values & Mark, Sociology & Social Life Edi 1959, page 85. Internalized Through The process of Conditioning. Learning Socialization & That become subjective preferences, sandara & Aspirations `Mukarjee & B.Singh' The Erontiers of Social Sciences. Macmillion & Co. London 1956 page. 23

2 तव स्पर्शे स्पर्शे १००/१४७

के माध्यम से अनुशासित शैली में आज की वस्तुस्थिति का यथार्थ चित्रण कर कहते हैं कि जिस देश में विश्वबन्धुत्व की भावना प्रसिद्ध थी वह भाषिक और धार्मिक आधार पर बंट गया है निर्भीकता वंश-परम्परा से प्राप्त थी आज वह देश चीन और पाकिस्तान से भयभीत हो रहा है-

विश्वबन्धुत्वमुद्घोषयत्पावनं
प्रान्तभाषाविभक्तञ्च धर्मादिभिः।
स्वं गृहं वह्निना सेचयत्सन्ततं
चीनपाकादिभीतं प्रियं भारतम्॥1॥ (भाति ते भारतम्)

आज देश में जो परिवर्तन का क्रम चल रहा है उसमें किसी भी प्रकार के जीवन-मूल्य की बात करना तब तक बेमानी है जब तक आतंकवाद, जातिवाद, नक्सलवाद, कश्मीर जैसी समस्याएँ व्याप्त हैं-

काश्मिरे क्रन्दनं दक्षिणे नक्सलाः
नागविद्रोहिभिर्नागदेशोऽर्दितः।
जातिवादो विहारेषु वृद्धिं गतः
विक्लवं विह्वलं विस्मृतं भारतम्॥

भारत के वास्तविक स्वरूप को वो उजागर करते हुए वे साम्प्रदायिक वैमन्स्य को सामाजिक मूल्य के मार्ग में मुख्य अवरोध मानते हैं-

मन्दिरैर्मस्जिदैश्चैत्यगीर्जागृहैः
वैरबीजान्ति तैः 'कोमी' दावानलैः।
सम्प्रदायैर्हता शान्तिरेवास्ति भोः
मानवैर्दानवैर्लूञ्चितं भारतं॥

हम राम-राज्य की कल्पना तो करते हैं राम के आदर्शों पर चलना चाहते हैं पर स्वयं राम को ज्न्मभूमि विवाद के कारण हमने क्षुब्ध कर दिया है। राम के जीवन-मूल्य हमारे लिए आदर्श हैं हम उस पर बात करते हैं पर राम की दयनीय स्थिति जिसके हेतु हम हैं, उस पर मौन हो जाते हैं। आचार्य उस सत्य को स्वर देते हुए कहते हैं-

जन्मभूमेर्विवादे स्थितो राघवो
नैव कारागृहान्मुच्यते माधवः
गोवधाद् दुःखितं यत्र वृन्दावनं
शङ्करोऽस्ति श्मशाने सुखी भारतं।[3]

गाँधी जी का व्यक्तित्व, उनकी शिक्षा, अहिंसा का मार्ग आदि हमारे जीवन के लिए अनुकरणिय आदर्श हैं पर क्या वास्तव में केवल इस पर कह देने मात्र से ये सम्भव है क्योंकि उनके आदर्शों को तो हम भूल ही चुके हैं-

गान्धि टोपी र्गता गान्धिर्यष्टिर्गता

---

[3] (प्रकाशित) लोकभाषा जून-जुलाई २००५-०६

गान्धिचारित्र्यधारापि नष्टं गता

जम्बुकैर्गृद्धकैर्ताबकैर्लोलुपै-

र्गान्धि नाम्ना कृतं दाम्भिकं भारतम्॥

माधव का स्वर यहाँ पर क्रान्तिकारी होकर संवेदनाओं को जगाने का प्रयास करता है। वे भारत की राजनीति जो कि पूर्णरूप से कलुषित हो चुकी है, उसका वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करते हैं। संसद जो कि लोकतंत्र का मन्दिर मानी जाती है उस पर लोक कल्याण के स्थान पर प्रतिदिन नेताओं में परस्पर युद्ध चलता रहता है जिसकी लाठी उसकी भैंस की उक्ति को चरितार्थ करते हुए वह संसद उल्लुओं से सुशोभित है-

यत्र नास्त्यङ्कुशो वाचि वा मानसे संसदि प्रत्यहं जायते डम्बरः।

यस्य यष्टिर्महिषीपि तस्यास्ति भो उल्लुभिर्लल्लुभिः शोभते भारतम्॥ (भाति ते भारतम्, 11वां पद्य)

जिस औषधि-निर्माण आदि प्रगति पर शुक्ल जी को गर्व है उस पर माधव जी का दुःख प्रत्येक निर्धन की आत्माभिव्यक्ति है। ग्राम-सभ्यता सभी प्रकार से रोगों से व्याकुलित है। प्रतिदिन औषधियों में मूल्यवृद्धि, चिकित्सकों की मनमानी से आज भारत दुःखी है।[4] राष्ट्र के लिए लड़ने वाला युवा आज स्वयं के अस्तित्व के लिए युद्धरत है। असंख्य रोगों से वह लड़ रहा है उस पर कैंसर के साथ अब एड्स जैसे असाध्य रोग पनप रहे हैं। समाज में जानवर और आदमी में अन्तर कर पाना मुश्किल है।[5] फिर ऐसे रुग्ण वातावरण में देशभक्ति या संवर्धन की बात करना बेमानी ही है। अतः माधव का आग्रह यही है कि इन सभी बातों पर विचार कर इन समस्याओं का शीघ्रातिशीघ्र निदान किया जाए ताकि राष्ट्र को अधिक सशक्त किया जा सके।

माधव इस परम्परा के अनूठे कवि हैं जो मानवीय-मूल्यों को स्वर तो देते हैं लेकिन यथार्थ स्थिति का ताना-बाना भी प्रस्तुत करते हैं। यह सत्य भी है कि हमारे मूल्य या आदर्श तभी स्थापित हो सकते हैं जब उनमें वर्तमान से सामञ्जस्य स्थापित करने की क्षमता हो। अपने कर्त्तव्यों के लिए जिन पुरुषोत्तम राम ने परिवार एवं राजसुख का परित्याग कर दिया उनकी अयोध्या व्यक्तिगत स्वार्थों की ज्वाला में दग्ध हो रही है। ऐसी घृणित राजनीति से रक्तरञ्जित अयोध्या में यदि राम स्वयं लौट आयें तो घनीभूत शोक से पीड़ित अयोध्या कैसे आश्वस्त कर पायेगी उन्हें क्योंकि-

अधुना

अयोध्यायां मनुष्या न वसन्ति

वसन्त्यत्र विषादखण्डाः

महालयेषु अश्रुदीपाः प्रज्ज्वलन्ति

भित्तिषु व्यथाः श्वसन्ति।

---

[4] ग्रामता सर्वथाऽस्ते रुजा व्याकुला औषधानाञ्च मूल्यं सदा वर्धते।
वर्धते 'डाक्टराणां' नु शुल्कं पुनः रोगिभिर्भोगिभिर्व्याकुलं भारतम्॥12॥ भाति ते भारतम्।

[5] भाति ते भारतम्, पद्य13-14

अपि च क्रौञ्चमिथुनचीत्कारः
सूरयूजलायते।
हृदयं सुमन्त्ररिक्तरथायते।
मनोऽहल्यायते
महालयपर्यङ्के
घनीभूतः शोकः छिन्नवृक्षायते।
अधुना रामः प्रतिविवर्तेत् चेत्
तदापि प्रत्यभिज्ञान रहितो रामः
स्मृतेर्ध्वंसावशेषतां गतां विषादजडाम्
अयोध्यां कथं समाश्वासयेत्?
कथम् ? कथम् ?[6]

समाज के गिरते मूल्य ही कवि को यह कहने को बाध्य करते हैं कि- **लंकायाम् एको विभीषणोऽपि आसीत्।** अर्थात् आज के समय से तो रावण राज्य ही अच्छा था जिसमें एकमात्र रावण ही मतिभ्रष्ट था। परन्तु रावण की दुर्नीतियों का प्रबल विरोधी एक विभीषण भी था। माधव ने अपने काव्यों में सामान्य से विशिष्टता का प्रणयन कर अपनी मौलिक्ता सिद्ध की है। संस्कृत साहित्य के एक प्रसिद्ध उदाहरण वाक्य 'पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते' का अवलम्ब लेकर कवि ने जिस प्रकार घोर सामाजिक अन्तर्विरोधों को वाणी दे डाली है वह श्लाघ्नीय है-

देवदत्तो जले वसन्नपि/ करोति वैरं मकरेण।
काचगृहे स्थित्वा/ क्षिपति पाषाणगुटिकाम् अन्यत्र।
पुष्पेषु विकसन्नपि/ कण्टकैः प्रीतिं करोति।
एकस्य टोपीं धृत्वा/ उच्छालयति ताम् कदापि।
आपणं गत्वा/ स विक्रीणाति आत्मानम्।
स्नानगृहं गत्वा/ शिश्नदेवो भवति चित्रपटं स्मारं स्मारम्।
मन्दिरे समभ्यर्च्य/ मस्जिदे निगूढो भवति।
शान्तिमन्त्रणां कृत्वा/ रथ्यासु प्रसारयत्यातङ्कं।
स्वरोटिकां पाचयितुम्।
इदमेव कारणमस्ति
यत्
पीनो देवदत्त दिवा न भुङ्क्ते।[7]

---

[6] निष्क्रान्ताः सर्वे, पृ०३

[7] भावस्थिराणि, पृ० १०९

यह है आधुनिक देवदत्त के मोटापे का राज। भला कौन है जो इस व्यंग्य को चुनौती दे सकता है। गणितीय संकल्पनाओं को कविता में भी स्थान दिया जा सकता है यह माधव जी के काव्य में प्रदर्शित होता है। जीवन की घुटन, पीड़ा,बेबसी इस प्रकार कही गयी है कि पाठक हतप्रभ हो जाता है-

ऑफिस चिन्ता X गृहिणी + उपनेत्रं % क्षय = जीवितम्।[8]

जीवन के इतने अवसादों में जीवन निर्वहण ही एक कर्मचारी की नियति है।

आधुनिक जीवन के खोखलेपन के यथार्थ की अवगम्यता ने कवि की कविता में एक झकझोरने वाली प्रश्नाकुलता का आधान किया है। आज के जीवन में प्रणय का पर्याय क्या रह गया है, क्या केवल क्रन्दन? यह प्रश्न 'प्रणयस्य पर्यायः' शीर्षक कविता में उठाया गया है-

फ्लेटटेनामेंट कक्षेषु
केक्टसप्रजाः वृद्धिं गच्छन्ति
कोफिपात्रेण सह ओष्ठौ स्पृशतः
विविक्तवाष्पम्
सिगरेटधूमेन सह
बहिर्गच्छत्यौदासीन्यं वलयितम्। [9]

सबको निष्क्रान्त कर कवि कविता के नवीन मार्गों को उद्घाटित करते हैं।

आधुनिक समय में देश की यह विडम्बना है कि क्रिकेट खेलने वाले खिलाड़ियों को पुरस्कार दिए जाते हैं और देश के लिए शहीद होने वाले वीर सेनानियों को कोई नहीं पूछता। इस बात को कवि तीव्र स्वर में उठाता है-

क्रिक्रेटक्रीडायाः विजयवार्ता/ खादति सैनिकानां/ वीरगतिप्राप्तिवृत्तान्तम्।[10]

माधव की कविता में यह सत्यकथन कईं स्तरों को भेदता है। वह जीवन के उन पक्षों को सम्मुख रखता है जिन पर कोई चर्चा नहीं करना चाहता। ये जीवन के छुईमुई जैसे पक्ष हैं जो ऊपर से तो नगण्य प्रतीत होते हैं परन्तु उनमें जीवन के बड़े अन्तर्विरोध समाये हुए हैं। आधुनिक वाङ्मय में इनकी पहचान करते हुए यह अभिव्यक्ति वर्तमान साहित्य की काव्यसंपत् बन पाई है, जिसमें पत्नी शयनकक्ष में हलाल किये जाने के लिए लाया गया पशु प्रतीत हो, धूप की बत्ती की तरह जले और जो देवता के रूप में उससे पूजा कराने बैठे, वे पथराये रह जाएँ-

पत्नी क्षिपति शयनकक्षे वध्यप्राणिवत् स्वशरीरम्।
पत्नीं धूपशलाकामिव दृष्ट्वा अहं भवामि देवत्वहीनः पाषाणखण्डः।

समाज में व्याप्त भय और आतंक को लेकर माधव कहते हैं-

पिहितवातायनेषु

---

[8] ऋषे क्षुब्धे चेतसि, पृ० २७

[9] निष्क्रान्ताः सर्वे, पृ०११७

[10] वहीं पृ० ३

पिहितगृहेषु
भयं वसति निर्भयतया।

सीमा पर युद्ध छिड़ चुका है। किसी विरहिणी का पति सेना में मोर्चे पर डटा हुआ है। वधू का मन व्याकुल-विह्वल हो रहा है। सुबह होते ही उसकी मुँडेर पर कौवा काँव-काँव कर रहा है। इसी भावभूमि पर सहसा युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए पति की स्थिति के संकेत देख नारीसंवेदना के मर्मवेधी प्रसंग को कवि ने छुआ है-

"काक भ्रातः! गच्छ दूरं
गच्छ दूरं मे गृहात्।
कोऽपि वीरो यो गतोऽस्ति
नैव निवृत्तो रणात्।
व्योम्नि गृधाः हा! हताऽस्मि
कङ्कणं भ्रष्टं करात्॥"

नारी उत्पीड़न की समस्या को अत्यन्त मार्मिकता के साथ कवि ने चित्रित किया है। घरेलू हिंसा पर 'कण्णक्या क्षिप्तं नूपुरम्' में ये पंक्तियाँ हृदय के मर्म का स्पर्श करती हैं-

स्नानगृहं गत्वा
गृहक्लेश श्रान्ता वधूः
निःशब्दं रोदिति
तदा स्नानगृहं
तस्याः पितृगृहं भवति।

हर्षदेव माधव की कविताओं में नैतिकता का समावेश भी पग-पग पर प्रदर्शित होता है। माधव की शकुन्तला में जहाँ एक ओर अपनी परम्पराओं का निर्वहण करने की ललक है तो दूसरी ओर परिपाटी को तोड़ने का साहस भी है। माधव की शकुन्तला कालिदास की शकुन्तला की भाँति मौन रहना नहीं जानती अपितु वो प्रत्युत्तर देने का साहस करती है। कालिदास ने भावी कवियों के लिए जिस चिन्तन को छोड़ दिया था उसे माधव जी ने पूर्ण किया है-

आर्यपुत्र!
त्वयाऽहं स्वीकृता सर्वदमनस्य जननीति मत्वा
शकुन्तला तु मृता
हस्तिनापुरे प्रत्याख्यानसमये
शकुन्तला तु दिवंगता
त्रिदिवसावसाने चतुर्थदिवप्रभाते
अधुना
शकुन्तलाया मृतकलेवरे

सर्वदमनस्य माता जीवति..... [11]

माधव की शैली भी अद्भुत शैली है। वे समाचार पत्रों के समाचारों, विज्ञापनों या मोबाइल पर किये जाने वाले एस.एम.एस.(sms) से या सड़कों पर लगे यातायात संदेशों के विन्यास से बनने वाली रचनाएँ हैं। एक कविता कवि के खोये हुए मोबाइल की सूचना है। सूचना दी गई है कि किसी कवि का खोया हुआ मोबाइल मिला है, जिसमें संकेत (कांटेक्ट्स) के नाम पर कोकिल, कलियों, पुष्पों, नदियों, ऋतुओं और हवा का लहरों के नाम हैं, रिसीव होने वाले कॉल्स ईश्वर के, वाग्देवी के विहगों गगन के नक्षत्रों या भावों के हैं, लघुसंदेश विश्वप्रणय के, अपने भीतर की श्रद्धा के या कुछ कोमल हृदय के हैं। कवि की वाणी जो खो गया है, उसके विषय में सचेत करती है। इसे सचेत कर देने को संदेश माना जाये या न माना जाये। या फिर क्या प्रणयमार्ग पर चलने वालों के लिए सूचनाएँ देने वाली कविता को संदेश मानें या न मानें, जिस पर पहली सूचना यही है कि विद्वज्जन इस रास्ते से दूर रहें, और इस रास्ते पर चलने वाले यह समझ कर आगे बढ़ें कि यू टर्न लेना संभव नहीं होगा -

सावधानमनसा गच्छ

अयं प्रणयमार्गो वर्तते

विबुधजनैरितो वाममार्गो वरणीयः

आङ्ग्लः 'यू'-आकृतिमयं प्रतिनिवर्तनं नेतः शक्यम्।

बचपन के छोटे-छोटे दुःखों के साथ माँ की अनुभूति संयुक्त होती है। माँ शिक्षा देती है कि किसी को दुःख मत देना इससे इससे ईश्वर को कष्ट होता है, उसके हृदय पर घाव हो जाते हैं। वर्तमान में सर्वत्र हिंसा और संत्रास का ताण्डव है तो ईश्वर का हृदय तो घावों से भरा होगा अतः माधव कल्पना चातुर्य का परिचय देते हुए कहते हैं कि शायद इन्हीं घावों के उपचार हेतु माँ स्वर्ग चली गई है। हर्षदेव माधव सचमुच गहन विचारों के धनी हैं छोटे से कथ्य में माँ का बच्चों को संस्कार, माँ का वात्सल्य वर्णित है। माँ ही है जो ईश्वर के घावों पर मरहम लगाने में समर्थ है-

अधुना सर्वत्र हिंसा-संत्रासवादताण्डवे

पीडितोऽहं विचारयामि

यद् ईश्वरस्य व्रणेषूपचारं

कर्त्तुमेव

अम्बा

गता भवेत् स्वर्गम्। (व्रणो रूढग्रन्थिः, पृ०113)

शिक्षा हमारे आदर्श और नैतिकता का हेतु है परन्तु पुस्तक से अतिरिक्त व्यवहार अथवा अनुभव से अधिक सीख प्राप्त होती है। आज बच्चों के कंधों पर पुस्तकों का बोझ वर्तमान शिक्षा प्रणाली की दयनीयता है -

हे कालिदास

---

[11] तव स्पर्शे स्पर्शे ७३/११०

पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं
शिरीषपुष्पं
न पुनः पतत्त्रिणः
किंतु
अत्र शिरीषकोमलपुष्पेषु
निहिता
ज्ञान-सूचना-ग्रन्थपर्वताः।[12]

माधव इस बात से क्षुब्ध हैं कि **सत्यमेव जयते** जैसे आदर्श वाक्य मात्र कहने तक सीमित हैं, व्यवहार में वे परिणत नहीं हो रहे।[13] युवा-वर्ग जो फिल्मी दुनिया देखकर पथभ्रष्ट हो रहे हैं, उनके नायक-नायिका आज राम-भरत जैसे चरित्रों, सीता, लक्ष्मीबाई जैसी आदर्श नारियों को छोड़कर फिल्मी नायिकाओं की स्तुति की जा रही है क्या यही शेष रह गया है? वस्तुतः हर्षदेव माधव यहाँ पर व्यञ्जित करना चाहते हैं कि उन वास्तविक चरित्रों का अनुगमन करो जो अनुसरणीय एवं अनुकरणीय हैं-

नैव सीता सदा 'माधुरी' स्मर्यते अम्बिका नैव 'रानी' पुनः स्तूयते।
'प्रीति जिण्टा' 'विपाशा'मयी सभ्यता यौवनोच्छृङ्खलं तावकं भारतम्॥[14]

माधव की राष्ट्रीयता वास्तव में यथार्थवादी राष्ट्रीयता है; जिसमें चिन्तन की संगति की अपेक्षा आवेग और आक्रोश प्रधान है। उसमें उत्साह, उमंग और आस्था है उसमें विश्व-प्रेम का भी वर्णन है। वह पग-पग पर कटाक्ष कर इंगित कराती है कि राष्ट्र के प्रति निष्ठावान बनों। उनकी राष्ट्रीयता अन्तर्राष्ट्रीयता या मानवतावाद में परिणत होने का प्रयास करती है। एक ओर माधव की कविता हमें निराशा के भंवर से निकालकर आशान्वित करती है तो दूसरी ओर उनका काव्य हमें अति आत्ममुग्ध होने से बचाता हआ समसामयिकता के आयाम पर ला छोड़ता है। जहाँ हमारे सम्मुख जीवन-निर्माण हेतु चिन्तन-मन्थन और करणीय-अकरणीय, ग्राह्य-त्याज्य आदि सभी प्रकार के दृष्टान्त उपस्थित हैं। इन दोनों काव्यों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का भाव और प्रबल हुआ है जो हमें अवसाद और अति आत्मविश्वास से बचाता है। माधव के काव्य में हमारे आदर्शों एवं उच्च मान्यताओं को पुनः अनुकरण करने की सीख है। वह नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक सभी मूल्यों को बिम्बित करते हैं यदि इसे केवल नकारात्म कहा जाय तो असमीचीन चिन्तन होगा वस्तुतः उनके काव्य में भले ही एक वृद्ध व्यक्ति की डाँट दिखे दे एक निर्मोह अथवा निराशावाद दिखे पर जब हम उसके भीतर प्रवेश करते हैं तो हम पाते हैं कि वह डाँट या क्रोध एक माँ की ममता को लिए हुए है एक पिता की पुत्र के प्रति चिन्ता को लिए हुए है, वह हमसे जुडे रहना चहाती है हमें सम्बल प्रदान करती है। वह काव्यधारा निराशा में आशा का संचरण करती प्रतीत होती है।

---

12 संक्षिप्त संदेशसेवा कविता, पृ०46

13 यत्र सत्यं जयत्येव सूत्रे सदा रावणैः स्वादितं भो! सुखं सर्वथा।
यस्य श्यामधनं 'स्वीसवेङ्कं' गतं पङ्कदिग्धं यथा पङ्कजं भारतम्॥20॥ भाति ते भारतम्

14 भाति ते भारतम्, 22 वां पद्य

संस्कृत साहित्य के नूतन शिल्पकार के रूप में हर्षदेव माधव ने अपनी रचनाओं के माध्यम से न केवल अपनी सशक्त उपस्थिति अंकित करवायी है अपितु एक चुनौती भी अन्य जनों को दी है कि संस्कृत भाषा के कलेवर में रचनाएँ किस प्रकार सजीव हो उठती हैं। साथ ही युवा अध्येताओं के लिए माधव की कविता एक पाथेय है जो प्राचीन समय से चली आ रही परम्पराओं को नवीन साँचे ढालकर यह बताती है कि संस्कृत कविता कैसे वैश्विक पटल पर पुनः स्थापित हो सकती है।